IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पराशर होराशास्त्र का समीक्षात्मक विवेचन

Dr. Narayan Kumar Jha

Assistant Professor,

Department of Sanskrit

R. B. Jalan Bela College, Bela, Darbhanga, Bihar - 846005

Abstract: ज्योतिषशास्त्र की व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया है – **'ज्योतिषां सूर्यादिग्रहाणां बोधकं शास्त्रम्'** अर्थात् सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिषशास्त्र कहा जाता है। इसमे प्रधानतः ग्रह, नक्षत्र, राशि के आधार पर मानवजीवन पर होने वाले फलाफल का विवेचन किया जाता है। मध्यकालीन भारतीय संस्कृति नामक पुस्तक में श्री ओझा जी ने लिखा है कि ''भारत ने अनेक देशवासियों को जो अन्य बातें सिखाईं, उसमें सबसे अधिक महत्त्व अंकविद्या का है। संसार भर में गणित, ज्योतिष, विज्ञान आदि की जो उन्नति आज पायी जाती है, उसका मूल कारण वर्त्तमान अंक क्रम है, जिसमें 1 से 9 तक के अंक और शून्य इन 10 चिह्नों से अंक विद्या का सारा काम चल रहा है। यह क्रम भारतवासिंयों ने ही निकाला और उसे सारे संसार ने अपनाया। अरबी भाषा में लिखी गयी 'आइन–उल–अम्बाफितल कालूली अत्वा' नामक पुस्तक में लिखा है कि ''भारतीय विद्यानों ने अरबी के अंतर्गत बगदाद की राजसभा में जाकर ज्योतिष, चिकित्सा आदि शास्त्रों की शिक्षा दी थी। कर्क नाम के एक विद्वान शक् संवत् 694 में बादशाह अलंमसूर के दरबार में ज्योतिष और ज्ञानदान के निमित्त गये थे।

Index Terms - राशि, नक्षत्र, ज्योतिष, पराशर, काल, समय।

Introduction

कुछ पाश्चात्य विद्वान भारतीय ज्योतिष को बेबिलोन से आया हुआ बतलाते हैं। उन्होंने लिखा है कि भारतीय बेबीलोन गये और वहाँ से ज्योतिष सिखकर आये, मैक्समूलर ने इस मत की समीक्षा करते हुए लिखा है कि –

"The Twenty seven constellations, which were chosen in Inadia as a kind of lunar zodiac, were supposed to have come from Babylon. Now the Babylonian zodiac was solar, and in spite of repeated researchews, no trace of lunar zodiac has been found,..... But supposing even that a lunar zodiac had been discovered in Babylon, no one acquainted with Vedic literature and with the ancient Vedic Germenial would easily allow himself to be presuaded that the Hindus had borrowed that simple division of the sky from the Babylonians. It is well known that most of the vedic sacrifices depend on the moon far more than on the sun."

अगर उपर्युक्त आधार को तथ्य मानें तो ऐसा लगता है कि प्राचीन भारतीय विद्वान खगोल का ज्ञान प्राप्त करने के लिए बेबिलोन गये और वहाँ की भाषा सीखकर खगोल विद्या सिखी। भारत वापस आकर सूर्य को आधार मानकर आकाश के विभाग करने में कठिनाई का अनुभव किया, क्योंकि सूर्योदय होने पर अधिकांश नक्षत्र दूर–दर्शक यंत्र से भी नहीं देखे जा सकते और इस कारण चन्द्रमा के आधार पर आकाश को 27 नक्षत्रों में बाँटा, चन्द्रमा की विभिन्न कलाओं का अध्ययन करके उसके अनुसार पक्ष, मास, और वर्ष बनाये, जिन्हें आगे चलकर सौर समय से सम्बद्ध कर दिया गया । मैक्समूलर ने आगे बताया है कि –

"We must never forgot that what is natural in one place."

खगोल शास्त्र

चन्द्र संबंधी खगोल शास्त्र का सबसे बडा क्रेटर है डेडलस । १९६९ में चन्द्रमा की प्रदक्षिणा करते समय अपोलो ११ के चालक–दल (क्रू) ने यह चित्र लिया था । यह क्रेटर पृथ्वी के चन्द्रमा के मध्य के नजदीक है और इसका व्यास (diameter) लगभग ९३ किलोमीटर या ५८ मील है ।

खगोल शास्त्र, एक ऐसा शास्त्र है जिसके अंतर्गत पृथ्वी और उसके वायुमण्डल के बाहर होने वाली घटनाओं का अवलोकन, विश्लेषण तथा उसकी व्याख्या की जाती है। यह वह अनुशासन है जो आकाश में अवलोकित की जा सकने वाली तथा उनका समावेश करने वाली क्रियाओं के आरंभ, बदलाव और भौतिक तथा रासायनिक गुणों का अध्ययन करता है।

बीसवीं शताब्दी के दौरान, व्यावसायिक खगोल शास्त्र को अवलोकिक खगोल शास्त्र तथा काल्पनिक खगोल तथा भौतिक शास्त्र में बाँटने की कोशिश की गई है । बहुत कम ऐसे खगोल शास्त्री है जो दोनो करते है क्योंकि दोनो क्षेत्रों में अलग अलग प्रवीणताओं की आवश्यकता होती है, पर ज्यादातर व्यावसायिक खगोलशास्त्री अपने आप को दोनो में से एक पक्ष में पाते है ।

खगोल शास्त्र ज्योतिष शास्त्र से अलग है । ज्योतिष शास्त्र एक छद्म–विज्ञान है जो किसी का भविष्य ग्रहों के चाल से जोड़कर बताने कि कोशिश करता है। हालाँकि दोनों शास्त्रों का आरंभ बिंदु एक है फिर भी वे काफी अलग है। खगोल शास्त्री जहाँ वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करते हैं जबकि ज्योतिषी केवल अनुमान आधारित गणनाओं का सहारा लेते हैं।

खगोलिकी ब्रह्मांड में अवस्थित आकाशीय पिंडों का प्रकाश, उद्भव, संरचना और उनके व्यवहार का अध्ययन खगोलिकी का विषय है। अब तक ब्रह्मांड के जितने भाग का पता चला है उसमें लगभग 19 अरब आकाश गंगाओं के होने का अनुमान है और प्रत्येक आकाश गंगा में लगभग 10 अरब तारे हैं। आकाश गंगा का व्यास लगभग एक लाख प्रकाशवर्ष है। हमारी पृथ्वी पर आदिम जीव 2 अरब साल पहले पैदा हुआ, और आदमी का धरती पर अवतण 10–20 लाख साल पहले हुआ।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक महापिंड के विस्फोट से हुई है। सूर्य एक औसत तारा है जिसके नौ मुख्य ग्रह हैं, उनमें से पृथ्वी भी एक है। इस ब्रह्मांड में हर एक तारा सूर्य सदृश है। बहुत–से तारे तो ऐसे हैं जिनके सामने अपना सूर्य अणु (कण) के बराबर भी नहीं ठहरता है। जैसे सूर्य के ग्रह हैं और उन सबको मिलाकर हम सौर परिवार के नाम से पुकारते हैं, उसी प्रकार हरेक तारे का अपना अपना परिवार है। बहुत से लोग समझते हैं कि सूर्य स्थिर है, लेकिन संपूर्ण सौर परिवार भी स्थानीय नक्षत्र प्रणाली के अंतर्गत प्रति सेकेंड 13 मील की गति से घूम रहा है। स्थानीय नक्षत्र प्रणाली आकाश गंगा के अंतर्गत प्रति सेकेंड 200 मील की गति से चल रही है और संपूर्ण आकाश गंगा दूरस्थ बाह्य ज्योर्तिमालाओं के अंतर्गत प्रति सेकेंड 100 मील की गति से विभिन्न दिशाओं में घूम रही है।

चंद्रमा पृथ्वी का एक उपग्रह है जिस पर मानव के कदम पहुँच चुके हैं। इस ब्रह्मांड में सबसे विस्मयकारी दृश्य है– आकाश गंगा का दृश्य। रात्रि के खुले आकाश में प्रत्येक मनुष्य इन्हें नंगी आँखों से देख सकता है। देखने में यह हल्के सफेद धुएँ जैसी दिखाई देती है, जिसमें असंख्य तारों का बाहुल्य है। यह आकाश गंगा टेढ़ी–मेढ़ी होकर बहती है। इसका प्रवाह उत्तर से दक्षिण की ओर है। पर सुबह के काल होने से थोड़ा पहले इसका प्रवाह पूर्वोत्तर से पश्चिम और दक्षिण की ओर होता है। देखने में आकाश गंगा के तारे परस्पर संबद्ध से लगते हैं, पर यह दृष्टि भ्रम है। एक दूसरे से सटे हुए तारों के बीच की दूरी अरबों मील हो सकती है। जब सटे हुए तारों का यह हाल है तो दूर दूर स्थित तारों के बीच की दूरी ऐसी गणनातीत है जिसे कह पाना मुश्किल है। इसी कारण से ताराओं के बीच तथा अन्य लंबी दूरियाँ प्रकाशवर्ष में मापी जाती हैं। एक प्रकाशवर्ष वह दूरी है जो दूरी प्रकाश एक लाख छियासी हजार मील प्रति सेकेंड की गति से एक वर्ष में तय करता है। उदाहरण के लिए सूर्य और पृथ्वी के बीच की दूरी सवा नौ करोड़ मील है, प्रकाश यह दूरी सवा आठ मिनट में तय करता है। अतरू पृथ्वी से सूर्य की दूरी सवा आठ प्रकाश मिनट हुई। जिन तारों से प्रकाश आठ हजार वर्षों में आता है, उनकी दूरी हमने पौने सैंतालिस पद्म मील आँकी है। लेकिन तारे तो इतनी इतनी दूरी पर हैं कि उनसे प्रकाश

के आने में लाखों, करोड़ों, अरबों वर्ष लग जाता है। इस स्थिति में हमें इन दूरियों को मीलों में व्यक्त करना संभव नहीं होगा, और न कुछ समझ में ही आएगा। इसीलिए प्रकाशवर्ष की इकाई का वैज्ञानिकों ने प्रयोग किया है।

मान लीजिए कि ब्रह्मांड के किसी और नक्षत्रों आदि के बाद बहुत दूर दूर तक कुछ नहीं है, लेकिन यह बात अंतिम नहीं हो सकती है। यदि उसके बाद कुछ है तो तुरंत यह प्रश्न सामने आ जाता है कि वह कुछ कहाँ तक है और उसके बाद क्या है? इसीलिए हमने इस ब्रह्मांड को अनादि और अनंत माना। इसके अतिरिक्त अन्य शब्दों में ब्रह्मांड की विशालता, व्यापकता व्यक्त करना संभव नहीं है।

अंतरिक्ष में कुछ स्थानों पर दूरदर्शी से गोल गुच्छे दिखाई देते हैं। इन्हें स्टार क्लस्टर या ग्लीट्यूरूलर स्टार अर्थात् तारा गुच्छ कहते हैं। इसमें बहुत से तारे होते हैं जो बीच में घने रहते हैं और किनारे बिरल होते हैं। टेलिस्कोप से आकाश में देखने पर कहीं कहीं कुछ धब्बे दिखाई देते हैं। ये बादल के समान बड़े सफेद धब्बे से दिखाई देते हैं। इन धब्बों को ही नीहारिका कहते हैं। इस ब्रह्मांड में असंख्य नीहारिकाएँ हैं। उनमें से कुछ ही हम देख पाते हैं।

इस अपरिमित ब्रह्मांड का अति क्षुद्र अंश हम देख पाते हैं। आधुनिक खोजों के कारण जैसे जैसे दूरबीन की क्षमता बढ़ती जाती है, वैसे वैसे ब्रह्मांड के इस दृश्यमान क्षेत्र की सीमा बढ़ती जाती है। परन्तु वर्तमान परिदृश्य में ब्रह्मांड की पूरी थाह मानव क्षमता से बहुत दूर है।

खगोल भौतिकी का आधुनिक युग जर्मन भौतिकविद् किरचाक से आरंभ हुआ। सूर्य के वातावरण में सोडियम, लौह, मैग्नेशियम, कैल्शियम तथा अनेक अन्य तत्वों का उन्होंने पता लगाया (सन् 1859)। हमारे देश में स्वर्गीय प्रोफेसर मेघनाद साहा ने सूर्य और तारों के भौतिक तत्वों के अध्ययन में महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्होंने वर्णक्रमों के अध्ययन से खगोलीय पिंडों के वातावरण में अत्यंत महत्वपूर्ण खोजें की हैं। आजकल हमारे देश के दो प्रख्यात वैज्ञानिक डा. एस. चंद्रशेखर और डा. जयंत विष्णु नारलीकर भी ब्रह्मांड के रहस्यों को सुलझाने में उलझे हुए हैं।

बहुत पहले कोपर्निकस, टाइको ब्राहे और मुख्यतरू कैप्लर ने खगोल विद्या में महत्वपर्णू कार्य किया था। कैप्लर ने ग्रहों के गति के संबंध में जिन तीन नियमों का प्रतिपादन किया है वे ही खगोल भौतिकी की आधारशिला बने हुए हैं। खगोल विद्या में न्यूटन का कार्य बहुत महत्वपूर्ण रहा है।

ब्रह्मांड विद्या के क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों (लगभग 45 वर्षों पूर्व) की खोजों के फलस्वरूप कुछ महत्वपूर्ण बातें समाने आई हैं। विख्यात वैज्ञानिक हबल ने अपने निरीक्षणों से ब्रह्मांडविद्या की एक नई प्रक्रिया का पता लगाया। हबल ने सुदूर स्थित आकाश गंगाओं से आनेवाले प्रकाश का परीक्षण किया और बताया कि पृथ्वी तक आने में प्रकाश तरंगों का कंपन बढ़ जाता है। यदि इस प्रकाश का वर्णपट प्राप्त करें तो वर्णपट का झुकाव लाल रंग की ओर अधिक होता है। इस प्रक्रिया को डोपलर प्रभाव कहते हैं। ध्वनि संबंधी डोपलर प्रभाव से बहुत लोग परिचित होंगे। जब हम प्रकाश के संदर्भ में डोपलर प्रभाव को देखते हैं तो दूर से आनेवाले प्रकाश का झुकाव नीले रंग की ओर होता है और दूर जाने वाले प्रकाश स्रोत के प्रकाश का झुकाव लाल रंग की ओर होता है। इस प्रकार हबल के निरीक्षणों से यह मालूम हुआ कि आकाश गंगाएँ हमसे दूर जा रही हैं। हबल ने यह भी बताया कि उनकी पृथ्वी से दूर हटने की गति, पृथ्वी से उनकी दूरी के अनुपात में है। माउंट पोलोमर वेधशाला में स्थित 200 इंच व्यासवाले लेंस की दूरबीन से खगोल शास्त्रियों ने आकाश गंगाओं के दूर हटने की प्रक्रिया को देखा है।

दूरबीन से ब्रह्मांड को देखने पर हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम इस ब्रह्मांड के केंद्रबिंदु हैं और बाकी चीजें हमसे दूर भागती जा रही हैं। यदि अन्य आकाश गंगाओं में प्रेक्षक भेजे जाएँ तो वे भी यही पाएंगे कि इस ब्रह्मांड के केंद्र बिंदु हैं, बाकी आकाश गंगाएँ हमसे दूर भागती जा रही हैं। अब जो सही चित्र हमारे सामने आता है, वह यह है कि ब्रह्मांड का समान गति से विस्तार हो रहा है। और इस विशाल प्रारूप का कोई भी बिंदु अन्य वस्तुओं से दूर हटता जा रहा है।

हबल नामक विद्वान के अनुसंधान के बाद ब्रह्मांड के सिद्धांतों का प्रतिपादन आवश्यक हो गया था। यह वह समय था जब कि आइन्सटीन का सापेक्षतावाद का सिद्धांत अपनी शैशवावस्था में था। लेकिन फिर भी आइन्सटीन के सिद्धांत को सौरमंडल संबंधी निरीक्षणों पर आधारित निष्कर्षों की व्याख्या करने में न्यूटन के सिद्धांतों से अधिक सफलता प्राप्त हुई थी। न्यूटन के अनुसार दो पिंडों के बीच की गुरु त्वाकर्षण शक्ति एक दूसरे पर तत्काल प्रभाव डालती है लेकिन आइन्सटीन ने यह साबित कर दिया कि पारस्परिक गुरु त्वाकर्षण की शक्ति की गति प्रकाश की गति के समान तीव्र नहीं हो सकती है। आखिर यहाँ पर आइन्सटीन ने न्यूटन के पत्र को गलत प्रमाणित किया। लोगों को आइन्सटीन का ही सिद्धांत पसंद आया। ब्रह्मांड की उत्पत्ति की तीन धारणाएँ हैं–

1. स्थिर अवस्था का सिद्धांत
2. विस्फोट सिद्धांत जिसे कि बिग बंग सिद्धान्त भी कहा जाता है और
3. दोलन सिद्धांत।

इन धारणाओं में दूसरी धारणा की महत्ता अधिक है। इस धारणा के अनुसार ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक महापिंड के विस्फोट से हुई है और इसी कारण आकाश गंगाएँ हमसे दूर भागती जा रही है। इस ब्रह्मांड का उलटा चित्र आप अपने सामने रखिए तब आपको ब्रह्मांड प्रसारित न दिखाई देकर सकुंचित होता हुआ दिखाई देगा और आकाश गंगाएँ भागती हुई न दिखाई देकर आती हुई प्रतीत होगी। अतरू कहने का तात्पर्य यह है कि किसी समय कोई महापिंड रहा होगा और उसी के विस्फोट होने के कारण आकाश गंगाएँ भागती हुई हमसे दूर जा रही हैं। क्वासर और पल्सर नामक नए तारों की खोज से भी विस्फोट सिद्धांत की पुष्टि हो रही है।

ज्योतिष उस विद्या को कहते हैं जिसमें मनुष्य तथा पृथ्वी पर, ग्रहों और तारों के शुभ तथा अशुभ प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। ज्योतिष शब्द का यौगिक अर्थ ग्रह तथा नक्षत्रों से संबंध रखनेवाली विद्या है। अतएव ज्योतिष त्रिस्कन्ध अर्थात् – होरा गणित एवं संहिता कहलाता है।

ग्रहों तथा तारों के रंग भिन्न–भिन्न प्रकार के दिखलाई पड़ते हैं, अतएव उनसे निकलनेवाली किरणों के भी भिन्न भिन्न प्रभाव हैं। इन्हीं किरणों के प्रभाव का भारत, बैबीलोनिया, खल्डिया, यूनान, मिस्र तथा चीन आदि देशों के विद्वानों ने प्राचीन काल से अध्ययन करके ग्रहों तथा तारों का स्वभाव ज्ञात किया। पृथ्वी सौर मंडल का एक ग्रह है। अतएव इसपर तथा इसके निवासियों पर मुख्यतया सूर्य तथा सौर मंडल के ग्रहों और चंद्रमा का ही विशेष प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी विशेष कक्षा में चलती है जिसे क्रांतिवृत्त कहते हैं। पृथ्वी के निवासियों को सूर्य इसी में चलता दिखलाई पड़ता है। इस कक्षा के इर्द गिर्द कुछ तारामंडल हैं, जिन्हें राशियाँ कहते हैं। इनकी संख्या 12 है। इन्हें, मेष, वृष आदि कहते हैं। प्राचीन काल में इनके नाम इनकी विशेष प्रकार की किरणें निकलती हैं, अतरू इनका भी पृथ्वी तथा इसके निवासियों पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक राशि 30 की होती है। मेष राशि का प्रारंभ विषुवत् तथा क्रांतिवृत्त के संपातबिंदु से होता है। अयन की गति के कारण यह बिंदु स्थिर नहीं है। पाश्चात्य ज्योतिष में विषुवत् तथा क्रातिवृत्त के वर्तमान संपात को आरंभबिंदु मानकर, 30–30 अंश की 12 राशियों की कल्पना की जाती है। भारतीय ज्योतिष में सूर्यसिद्धांत आदि ग्रंथों से आनेवाले संपात बिंदु ही मेष आदि की गणना की जाती है। इस प्रकार पाश्चात्य गणनाप्रणाली तथा भारतीय गणनाप्रणाली में लगभग 23 अंशों का अंतर पड़ जाता है। भारतीय प्रणाली निरयण प्रणाली है। फलित के विद्वानों का मत है कि इससे फलित में अंतर नहीं पड़ता, क्योंकि इस विद्या के लिये विभिन्न देशों के विद्वानों ने ग्रहों तथा तारों के प्रभावों का अध्ययन अपनी अपनी गणनाप्रणाली से किया है। भारत में 12 राशियों के 27 विभाग किए गए हैं, जिन्हें नक्षत्र कहते हैं। ये हैं अश्विनी, भरणी आदि।

ज्योतिषशास्त्र या एस्ट्रोलॉजी (ग्रीक भाषा ἄστρον के शब्द एस्ट्रोन, यानि तारा समूह –λογία, और लॉजिया (logia) से लिया गया है)। यह प्रणालियों, प्रथाओं (tradition) और मतों (belief) का वो समूह है जिसके जरिये आकाशीय पिंडो (celestial bodies) की तुलनात्मक स्थिति और अन्य सम्बंधित विवरणों के आधार पर व्यक्तित्व, मनुष्य की जिन्दगी से जुड़े मामलों और अन्य सांसारिक विषयों को समझकर, उनकी व्याख्या की जाती है और इस सन्दर्भ में सूचनाएं संगठित की जाती हैं। ज्योतिष जाननेवाले को ज्योतिषी (astrologer) या एक भविष्यवक्ता कहा जाता है। तीसरी सहस्राब्दी ई.पू. (3rd millennium BC) में इसके

प्राचीनतम अभिलिखित लेखों से अब तक, ज्योतिष के सिद्धांतों के आधार पर कई प्रथाओं और अनुप्रयोगों के निष्पादन हुए हैं। संस्कृति, शुरूआती खगोल विज्ञान, और अन्य विद्याओं को आकार देने में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आधुनिक युग से पहले ज्योतिष और खगोल विज्ञान अक्सर अविभेद्य माने जाते थे। भविष्य के बारे में जानना और दैवीय ज्ञान की प्राप्ति, खगोलीय अवलोकन के प्राथमिक प्रेरकों में से एक हैं। पुनर्जागरण से लेकर १८ वीं सदी के अंत के बाद से खगोल विज्ञान का धीरे धीरे विच्छेद होना शुरू हुआ। फलतः, खगोल विज्ञान ने खगोलीय वस्तुओं के वैज्ञानिक अध्ययन और एक ऐसे सिद्धांत के रूप में अपनी एक पहचान बनाई जिसका उसकी ज्योतिषीय समझ से कुछ लेना देना नहीं था।

ज्योतिषों का विश्वास है की खगोलीय पिंडों की चाल और उनकी स्थिति या तो पृथ्वी को सीधे तरीके से प्रभावित करती है या फिर किसी प्रकार से मानवीय पैमाने पर या मानव द्वारा अनुभव की जाने वाली घटनाओं से सम्बद्ध होती है। आधुनिक ज्योतिषियों द्वारा ज्योतिष को एक प्रतीकात्मक भाषा एक कला के रूप में या भविष्य कथन के रूप में परिभाषित किया गया है, जबकि बहुत से वैज्ञानिकों ने इसे एक छद्म विज्ञान या अंधविश्वास का नाम दिया है। परिभाषाओं में अन्तर के बावजूद, ज्योतिष विद्या की एक सामान्य धारणा यह है की खगोलीय पिण्ड अपने क्रम स्थान से भूत और वर्तमान की घटनाओं और भविष्वाणी को समझने में मदद कर सकते हैं।

ज्योतिष और विज्ञान

फ्रांसिस बेकन और वैजानिक क्रान्ति के समय से शुरू हुई वैज्ञानिक शिक्षण कि नई शाखाएं, प्रायोगिक अवलोकनों पर आधारित प्रणालीबद्ध प्रायोगिक प्रेरणा के तरीकों पर आधारित होने लगी। इस बिन्दु पर, ज्योतिष शास्त्र और खगोलमिति अलग–अलग हो गए, खगोलमिति एक केन्द्रीय या मुख्य विज्ञान के रूप में उभरा जबकि ज्योतिष शास्त्र प्रकृति वैज्ञानिकों द्वारा एक अंधविश्वास या एक गुप्त विज्ञान के रूप में देखा जाता है।

समकालीन वैज्ञानिकों जैसे की रिचर्ड डौकिंस और स्टीफेन हाउकिंस ने ज्योतिष शास्त्र को अवैज्ञानिक कहा और पैसिफिक खगोलमिति समाज के ऐनड्रयू फ्राकनोई ने इसे छद्म विज्ञान कहा है। १९७५ में, अमरीकी मानववादी संगठन ने ज्योतिष शास्त्र में विश्वास करने वालों के संदर्भ में कहा कि वो लोग ज्योतिष में विश्वास करते हैं जबकि उनके विश्वास का कोई प्रमाणित वैज्ञानिक आधार नहीं है बल्कि उसके खिलाफ कई प्रमाण हैं। ज्योतिर्विद कार्ल सेगन ने पाया कि वो इस वक्तव्य पर हताक्षर नहीं कर सकते, इसलिए नहीं कि वो ये सोचते है कि ज्योतिष मान्य है बल्कि इसलिए क्यूंकि उन्हें लगता है की इस वक्तव्य का लहजा सत्तावादी है। सेगन ने कहा की वो एक ऐसे वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने के इच्छुक होते और ज्योतिष के विश्वास के मुख्य सिधान्तों को नकारते, जो इस वक्तव्य से ज्यादा विश्वासोत्पादक और इस से कम विवाद पैदा करने वाला होता।

भले ही एक समय में ज्योतिष शास्त्र का बड़ा ही सीमित स्थान रहा हो, लेकिन २० वी शताब्दी की शुरुआत से ही ये ज्योतिष शास्त्रियों के बीच अनुसंधान का विषय रहा है। २० वी शताब्दी में नवजात ज्योतिष अनुसंधानों के ऐतिहासिक अध्ययन में, ज्योतिष आलोचक जैफरे डीन और सह लेखकों ने एक मुकुलित अनुसंधान कार्य का उत्पादन किया, जो की प्राथमिक रूप से ज्योतिष शास्त्रियों के समुदाए में ही रहा।

अनुसंधान

ज्योतिष अनुमान और कार्यकारी तरीके से निकाले गए परिणामो के बीच सांख्यिकीय महत्व से सम्बन्ध स्थापित करने में बार बार असफल रहे हैं। ज्योतिष में प्रभाव आकार के अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं की ज्योतिष अनुमानों की औसत सटीकता संयोग से होने वाली चीजों से ज्यादा नहीं है, और ज्योतिष का कथित प्रदर्शन आलोचनात्मक निरीक्षण के समय पूरी तरह गायब हो जाता है। संज्ञानात्मक व्यवहार, शारीरिक और अन्य परिवर्तनशील घटकों की जांच के लिए अध्ययन करते समय, टाइम ट्विन्स के एक ज्योतिष अध्ययन ने ये प्रर्दशित किया की मानव लक्षण जन्म के समय सूर्य, चंद्र, और ग्रहों से प्रभावित नहीं होती। ज्योतिष पर संशय करने वालों का ये भी कहना है की ज्योतिष व्याख्याओं और किसी के व्यक्तित्व के विवरण की कथित (बिज) सटीकता इस वजह से है क्यूंकि लोग सकारात्मक बिन्दुओं को बढ़ा–चढा कर लेते हैं और जो कुछ भी पसंद नहीं आता या फिट नहीं होता उसे नजर अंदाज कर देते हैं विशेषकर तब जब विवरण के लिए अस्पष्ट भाषा का प्रयोग किया

गया हों। उनके हिसाब से अनियंत्रित शिल्पकृतियों के कारण ज्योतिष के साक्ष्यों को अक्सर गलत रूप में देखा जाता है। एस्ट्रो ट्वीन्स के १५,००० नमूनों का एक बड़े पैमाने पर अध्ययन, २००६ में प्रकाशित हुआ था। इसने जन्म की तारीख और सामान्य बुद्धि और व्यक्तित्व के व्यक्तिगत अन्तर के बीच सम्बन्ध की जांच की और इस निष्कर्ष पर पहुँचा की दरअसल इनके बीच कोई सम्बन्ध है ही नहीं। यह भी पाया गया है की राशि चक्रों और प्रतिभागियों के व्यक्तिगत गुण के बीच कोई रिश्ता नहीं होता है।

फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक और सांख्यिकीविद माइकल गौकुएलिन ने दावा किया की उन्होंने कुछ ग्रहों की स्थिति और कुछ मानवीय गुण जैसे वृति या पेशे के बीच सम्बन्ध पाया है। गौकुएलिन के सबसे व्यापक रूप से ज्ञात दावे को मंगल के रूप में जाना जाता है, जो की मंगल ग्रह से सम्बन्ध प्रर्दशित करते हुए ये दिखाता है की आम आदमी की तुलना में किसी प्रसिद्ध खिलाडी के जन्म के समय मंगल ग्रह प्रायः आकाश में कुछ विशिष्ठ स्थितियों में होता है यही दावा रिचर्ड तर्नस ने अपनी कृति ब्रह्मांड और मानसिकता में भी किया है इसमे उन्होंने ग्रहों की स्थिति और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण घटनाओं और लोगों के बीच संबंधों की खोज की है १९५५ में इसके मूल प्रकाशन से, मंगल प्रभाव, इसे खारिज करने वाले कई आलोचनात्मक अध्ययनों और संशयी प्रकाशनों का विषय रहा है और साथ ही मंगल प्रभाव के मूल दावों का समर्थन करने वाले या उसे विस्तृत करने वाले कई अध्ययन जर्नल्स में प्रकाशित हुए हैं। गौकुएलिन की खोज पर विज्ञान की मुख्यधारा ने विशेष ध्यान नहीं दिया।

अनुसंधान में बाधाएं

आज ज्योतिष शास्त्र में वैज्ञानिक अनुसंधान करने में कुछ महत्वपूर्ण बाधाएं हैं। जिसमें शामिल है – धन की कमी, ज्योतिष शास्त्रियों द्वारा विज्ञान और सांख्यिकी में पृष्ठ भूमि की कमी, और संशय करने वालों एवं वैज्ञानिकों का ज्योतिष शास्त्र में पर्याप्त रूप से दक्ष ना होना। ज्योतिष शास्त्र में वैज्ञानिक अनुसन्धान (scientific research) के क्षेत्र में प्रकाशित पत्रों की संख्या बहुत कम है (यानी वैज्ञानिक अनुसंधान की तरफ निर्दिष्ट ज्योतिष पत्र या ज्योतिष अनुसंधान का प्रकाशन करने वाले वैज्ञानिक पत्र (scientific journal) दोनों ही कम संख्या में हैं। कुछ ज्योतिष शास्त्रियों का मानना है की आज ज्योतिष का काम करने वाले कुछ लोग वैज्ञानिक जांच का प्रयोग इसलिए करते हैं क्यूंकि उन्हें लगता है की दैनिक रूप से ग्राहकों के साथ काम करने से उनका व्यक्तिगत सत्यापन (personal validation) होगा।

ज्योतिष शास्त्रियों द्वारा दिया गया एक और तर्क है कि ज्योतिष के ज्यादातर अध्ययन में ज्योतिष अभ्यास की प्रकृति प्रतिबिंबित नहीं होती और वैज्ञानिक पद्धति (scientific method) ज्योतिष पर लागू नहीं होती। ज्योतिष पर विचार रखने वाले कुछ लोगों का तर्क है कि ज्योतिष के विरोधियों के इरादे और मौजूदा नजरिए के चलते ज्योतिष कि सटीकता मालूम करने के लिए होने वाले प्रोयोगों में, चेतन या अचेतन रूप से, जाँची जाने वाली परिकल्पना के निर्माण, जांच के संचालन और परिणाम की सूचना पक्षपात पूर्ण ढंग से दी जाती हैं।

भारतीय ज्योतिष के ईसवी पूर्व 5वीं शताब्दी के साहित्य का सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि इस युग में ज्योतिष का वेदांगों में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त था –

यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।

तद्वद् वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम् ''।।

अर्थात् यह ज्योतिष शास्त्र सभी वेदांगों व शास्त्रों में उसी प्रकार सिरमौर या शिरोमणि है, जैसे मोर के सिर पर स्थित कलंगी/चोटी तथा सर्पों के सिर पर उनकी मणियां स्थित होती हैं।

इस युग में ज्योतिष को ज्ञानरूपी शरीर का नेत्र कहा गया है अर्थात् नेत्रों के अभाव में जैसे शरीर अपूर्ण और व्यर्थ है उसी प्रकार ज्योतिषज्ञान के बिना अन्यविषयों का ज्ञान अपूर्ण और अनुपयोगी है। इस युग के ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान को व्यवहारोपयोगी होने के साथ साथ आत्मकल्याणकारी भी माना गया है । आचार्य गर्ग ने कहा है –

''ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।

ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम्''।।

अर्थात् ज्योतिश्चक्र सम्पूर्ण लोक के शुभाशुभ को व्यक्त करनेवाला है, अतः जो ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता है वह परम कल्याण को प्राप्त होता है।

ई0 100 से 300 तक के काल में इस शास्त्र की उन्नति विशेष रूप से हुई। कृत्तिकादि नक्षत्र गणना में राशियों का क्रम निर्धारित नहीं किया जा सकता था, इसलिए अश्विनी आदि नक्षत्र गणना प्रचलित हुई। तथा साथ ही तारा रेवती स्वीकृत हो गई थी। इस काल मतें ज्योतिष के प्रवर्त्तक निम्न 18 आचार्य हुए जिन्होंने अपने दिव्यज्ञान के द्वारा ज्योतिष के सिद्धान्तग्रन्थों का निर्माण किया :–

''सूर्यः पितामहो व्यासों वसिष्ठोऽत्रि पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः ''।।

– काश्यप

विश्वसृंगनारदो व्यासो वसिष्ठोऽत्रि पराशरः ।
लोमशो यवनः सूर्यश्च्यवनः कश्यपो भृगुः ।।
पुलस्त्यो मनुराचार्यः पौलिस्त्यः शौनकोऽगिराः।
गर्गो मरीचिरीत्येते ज्ञेया ज्योतिः प्रवर्त्तकाः ।।

– पराशर

अर्थात् सूर्य, पितामह, व्यास, वसिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पुलिश, च्यवन, यवन, भृगु, एवं शौनक ये 18 ज्योतिषशास्त्र के प्रवर्त्तक बतलाये गये हैं। पराशर ने इन आचार्यों के साथ पुलस्त्य नाम के एक और आचार्य को माना है अतः इनके अनुसार 19 आचार्य ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्त्तक हैं। नारद ने तो सूर्य को छोड़कर केवल 17 को ही ज्योतिष शास्त्र का प्रवर्त्तक बतलाया है।

पराशर – नारद और वसिष्ठ के अनन्तर फलित ज्योतिष के सम्बन्ध में महर्षि पद प्राप्त करनेवाले केवल पराशर ही हुए हैं। कहा जाता है कि ''कलौ पराशरः स्मृतः'' अर्थात् कलियुग में पराशर के समान अन्य कोई महर्षि नहीं हुए। उनके ग्रन्थ ज्योतिष विषय के जिज्ञासुओं के लिए बहुत उपयोगी है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र के प्रारम्भ में बतलाया गया है कि –

अथैकदा मुनिश्रेष्ठं त्रिकालज्ञं पराशरम् ।
पप्रच्छोपेत्य मैत्रेयः प्रणिपत्य कृतांजलिः।।

एक समय मैत्रेय जी ने महर्षि पराशर के समीप उपस्थित होकर साष्टांग प्रणाम करके हाथ जोड़कर पूछा –

भगवन्! परमं पुण्यं गुह्यं वेदांगमुतमम्।
त्रिस्कन्धं ज्यौतिषं होरा गणितं संहितेति च ।।
एतेष्वपि त्रिषु श्रेष्ठा होरेति श्रूयते मुने ।
त्वत्तस्तां श्रोतुमिच्छामि कृपया वद मे प्रभो।।

हे भगवन् ! वेदांगों में श्रेष्ठ ज्योतिषशास्त्र के होरा, गणित और संहिता इस प्रकार तीन स्कन्ध हैं । उनमें भी सबसे होराशास्त्र ही श्रेष्ठ है, वह मैं आपसे सुनना चाहता हूँ ।

पराशर का समय कौन सा है तथा इन्होंने अपने जन्म से जिस स्थली को पवित्र किया था, इसका कहीं भी जिक्र नहीं किया गया है। पर बृहत्पाराशरहोराशास्त्र तथा अन्य ग्रन्थों के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो

जाता है कि इनका समय 'वराहमिहिर' से कुछ पूर्व रहा होगा। वराहमिहिर के बृहज्जातक में ग्रहों के उच्च नीच स्थान, मूलत्रिकोण, नैसर्गिक मित्रता प्रभृति विषय पर बृहत्पाराशरहोराशास्त्र से ग्रहण किया हुआ प्रतीत होता है। भाषाशैली और विषय निरूपण वराहमिहिर से पूर्व का प्रतीत होता है। सृष्टितत्व का निरूपण सूर्य सिद्धान्त के समान है। पौराणिक में भी सृष्टि का निरूपण इसी प्रकार उपलब्ध होता है। मनुस्मृति और सूर्यसिद्धान्त के सृष्टिक्रम की अपेक्षा भिन्न है –

एकोऽव्यक्तात्मको विष्णुरनादिः प्रभुरीश्वरः । शुद्धसत्वो जगत्सवामी निर्गुणस्त्रिगुणान्वितः ।।

संस्कारकारकः श्रीमान्निभीतात्मा प्रतापवान् । एकादशेन जगत्सर्वं सृजत्यवती लीलया ।।

भारतीय ज्योतिष ग्रहनक्षत्रों की गणना की वह पद्धति है जिसका भारत में विकास हुआ है। आजकल भी भारत में इसी पद्धति से पंचांग बनते हैं, जिनके आधार पर देश भर में धार्मिक कृत्य तथा पर्व मनाए जाते हैं। वर्तमान काल में अधिकांश पंचांग सूर्यसिद्धांत, मकरंद सारणियों तथा ग्रहलाघव की विधि से तैयार किए जाते हैं। कुछ ऐसे भी पंचांग बनते हैं जिन्हें नॉटिकल अल्मनाक के आधार पर तैयार किया जाता है, किंतु इन्हें प्रायः भारतीय निरयण पद्धति के अनुकूल बना दिया जाता है।

Refrences:

- भारतीय ज्योतिष विज्ञान, रविन्द्र कुमार दूबे, प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रथम, 2002, 1661, दखनीराय स्ट्रीट, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली।
- भारतीय ज्योतिष, डॉ नेमिचन्द्र ज्योतिषाचार्य, भाररतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नवम, 1981, बी 45/47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।
- भृगु संहिता, फलित प्रकाश, मू0 लेखक – भृगु ऋषि, व्याख्याकार – राजेश दीक्षित, देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, दिल्ली ।
- बृहज्जातकम्, व्या0 – केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, 1985।
- बृहज्ज्योतिःसार, भाषानुवादक – पं0 श्री सूर्यनारायण सिद्धान्ती, तेजकुमार बुक डिपो प्रा लिमिटेड, उन्नीसवाँ, 2000, पोस्ट बॉक्स 85, 1 त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ।
- बृहज्ज्यौतिषसारः, सम्पादक – श्री रूप नारायण शर्मा, ठाकूर प्रसाद पुस्तक भण्डार, कचौड़ीगली, वाराणसी।
- चमत्कार चिन्तामणि, पं0 राजाराम ज्योतिषी फर्रूखाबाद, तेजकुमार बुक डिपो प्रा लिमिटेड, चतुर्थ संशोधित संस्करण, 2003, पोस्ट बॉक्स 85, 1 त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ।
- पराशर स्मृति, पृ0 गुरूप्रसाद शर्मा द्वारा भाषानुवादित, बाबू हरिनारायण वर्मा बुकसेलर, प्रथम संस्करण, 1923 ई0, नागेश्वर प्रेस, बनारस।
- Astrology Yoga Collections, Internet, Transmitted in 2009, www.Wikipedia.org
- भारतीय ज्योतिष, नेमिचन्द शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नवम संस्करण, 1981, भारतीय ज्ञानपीठ, बी 45/47, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।
- भृगु संहिता फलित प्रकाश, मू0 लेखक – भृगु ऋषि व्याख्याकार – प्रेम कुमार शर्मा, देहाती पुस्तक भण्डार, 2009 चावड़ी बाजार, दिल्ली ।
- अष्टाध्यायी, पाणिनी, निर्णय सागर प्रेस, रामलाल कपूर ट्रस्ट, अमृतसर, सोनीपत।
- अथर्ववेद, सायण भाष्य, शंकर पांडुरंग पंडित, निर्णय सागर प्रेस, 1962, विश्व विद्यालय शोध संस्थान, होशियारपुर।
- अथर्ववेद संहिता, सातवलेकर श्रीपाद दामोदर, स्वास्थ्य मंडल, 1950, पारडी, सूरत
- अत्ति स्मृति, मोर मनसुख राय, गुरू मंउल आश्रम, 1953, कलकत्ता।